संस्थान का पुस्तकालय : विकास एवं सेंवायें

प्रदीप कुमार,
परिचर

राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान की स्थापना " समिति पंजीकरण अधिनियम 1960" के अन्तर्गत जल संसाधन मंत्रालय (पूर्ववर्ती सिंचाई मंत्रालय), भारत सरकार द्वारा पूर्णतया वित्तीय सहायता प्राप्त संस्थान के रूप में दिसम्बर 1978 में रूड़की में हुई । यह संस्थान रूड़की विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त 6.5 हेक्टेयर भूमि पर जो इसे दीर्घ कालीन पट्टे पर प्राप्त हुई है, रूड़की विश्वविद्यालय परिसर में स्थित है । इस संस्थान के मुख्य भवन का प्रयोग दिसंबर, 1982 से होता आ रहा है । यह एक राष्ट्रीय अनुसंधान संगठन है और इसे मूलभूत, सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक जलविज्ञान में सुव्यवस्थित वैज्ञानिक अनुसंधान गति विधियों को संपन्न करने का कार्य भार सौंपा हुआ है । संस्थान लगातार अपने कार्यो को कर रहा है । जल विज्ञान और जल संसाधन के कार्यो के लिए संस्थान ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की है । संस्थान ने अपने चयनित केन्द्रों के माध्यम से देश के विभिन्न क्षेत्रों की विशिष्ट जल विज्ञानीय समस्याओं के समाधान का कार्य अपने हाथ में लिया है । वर्तमान में संस्थान के 6 क्षेत्रीय केन्द्र हैं । जो विभिन्न क्षेत्रों से संबन्धित जल संसाधन के कार्यो को कर रहे हैं ।

संस्थान की इन उपलब्धियों का काफी कुछ श्रेय संस्थान के पुस्तकालय को भी जाता है । क्योंकि शोध कार्य के लिए सूचना के एकत्रित, संरक्षण एवं सदुपयोग करने हेतु राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान पुस्तकालय जलविज्ञान के क्षेत्र में जानकारी का एक ऐसा भण्डार है जिसमें उपरोक्त विषय से संबंधित जानकारी को आसानी से खोजा एवं पुर्नप्राप्त किया जा सकता है ।
कोई भी पुस्तकालय, आधुनिक़ सूचना तंत्र के रूप में शैक्षिक स्तर और शोध कार्य के गुणों में सुधार करने और इन्द्रिय ज्ञान को बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। पुस्तकालय में पुस्तकालयघ्यक्ष की एक अहम भूमिका होती है कि वह अपने ज्ञान और अनुभव से पाठकों का समय बचाते हुए उनकी आवश्यकता के अनुसार उनकी मांग को पूरा करता है । दूसरे शब्दों में फूर्ति और समय की बचत से ज्ञान और सूचना को वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और तकनीशियनों की आवश्यकता को पुस्तकालघ्यक्ष आधुनिक यंत्रों, यांत्रिक विधियों और वैज्ञानिक विधियों और वैज्ञानिक प्रेक्षणों से जैसे विद्युत चुम्बकीय, फोटोग्राफी, ऑडियों-विजुवल और दूर संचार द्वारा पूरा करता है ।

पुस्तकालय का तीव्र कड़ी वाला विचार और इसके कार्य का प्रभाव शोध और तकनीकी पुस्तकालय में बहुत प्रशंसनीय होता है ।

पुस्तकालय एवं इसका विकास

शोध संस्थानों में बिना पुस्तकालय के किसी भी शोध प्रोजेक्ट के लिए नई और सम्पूर्ण सूचना एकत्रित करना मुश्किल होता है। रा०ज०स० के योजना कर्ताओं ने संस्थान के लिए एक शोध एवं सन्दर्भ पुस्तकालय की आवश्यकता को ध्यान में रखकर वर्ष 1979 में अपना तकनीकी पुस्तकालय स्थापित किया। यह पुस्तकालय संस्थान के शोध और विकास के कार्यो में जल विज्ञान एवं जल संसाधन संबंधी सूचना प्रदान कर रहा है।

संस्थान के पुस्तकालय में जल विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित वैज्ञानिक पुस्तकें, जर्नल्स (राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय) कम्प्यूटर पुस्तकें, कम्प्यूटर मैनुअल, तकनीकी रिपोर्ट, भारतीय एवं विदेशी मानक, एटलस एवं मानचित्र उपलब्ध है। पुस्तकालय में तकनीकी पुस्तकें , कहानियों की पुस्तकें एवं ग्रंथ हिन्दी में तथा केन्द्रीय सेवा नियमों की पुस्तकें भी उपलब्ध है। संस्थान का पुस्तकालय अपने स्वावलम्बन की ओर तेजी से अग्रसर है। संस्थान की वार्षिक प्रतिवेदन 1998-99 के अनुसार पुस्तकालय में अब तक जल विज्ञान एवं जल संसाधनों तथा कम्प्यूटर और इलैक्ट्रोनिकी के विविध विषयों पर 9972 पुस्तकें खरीदी जा चुकी हैं। इनमें से 1416 पुस्तकें राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्रों के पुस्तकालयों में स्थानान्तरित की गयी है। इसके अतिरिक्त अन्य संगठनों के 3659 तकनीकी प्रतिवेदन तथा तकनीकी प्रपत्र भी उपलब्ध है। पुस्तकालय में कम्प्यूटर साफ्टवेयर के 442 मैनुअल, 1979 मानचित्र, 41 माइक्रोफिश एवं 305 भारतीय तथा विदेशी मानक भी उपलब्ध है। पुस्तकालय में 35 भारतीय जर्नल तथा 40 विदेशी जर्नल भी निरंतर मंगाये जा रहे हैं।

शोध कार्य करने के लिए जर्नल एक प्राथमिक सूचना देने वाला प्रलेख है। जर्नल के माध्यम से ही शोध कार्य करने वालों को नई एवं आधुनिक सूचना प्राप्त होती है। शोध संस्थानों के पुस्तकालय जर्नल के बिना अपूर्ण है। जर्नल निश्चित विषय पर संपूर्ण जानकारी प्रदान करते है। रा०ज०स० के पुस्तकालय में जल संसाधन के विषय पर बहुत जर्नल है। हमारे वैज्ञानिक जल विज्ञान और जल संसाधन के क्षेत्र में जर्नल से काफी सूचनाएं प्राप्त करते है। कुछ मुख्य जर्नल जो हमारे पुस्तकालय में उपलब्ध हैं इस प्रकार हैः

1. Journal of Hydrology.
2. Water Resources Research.
3. Advances in water Resources
4. Ground water.
5. Hydrological Processes.
6. Hydrological Sciences Journal.
7. ASCE Journal of Hydraulic Engineering.
8. ASCE Journal of Environmental Engineering.
9. ASCE Journal of Irrigation & Drainage Engineering.
10. ASCE Journal of Water way Port Coastal and Ocean Engineering.
11. ASCe Journal of water Resources Planning and Management.
12. International Journal of Water Resources Development.

13. PE & RS.
14. Int. Journal of Remote Sensing.
15. Nordic Hydrology etc.

NATIONAL INSTITUTE OF HYDROLOGY
ROORKEE-247667 (U.P.)

पुस्तकालय की प्रगति का मुख्य पहलू उसका बजट है। पुस्तकालय का बजट उसकी आवश्यकता को दर्शाता है। रा०ज०स० के पुस्तकालय का वार्षिक बजट लगभग 11 लाख रूपये हैं। इस बजट में जर्नलों का वार्षिक अनुदान और पुस्तकें मुख्यालय रूड़की और क्षेत्रीय केन्द्रों के लिए शामिल है।

पुस्तकालय सेवाएं

जब से साहित्य के प्रकाशन में तीव्रता आई है तब से पुस्तकालय द्वारा प्रदान की जाने वाली विभिन्न सेवाओं का महत्व अपने आप ही बढ़ गया। पहले साहित्य कम मात्रा में प्रकाशित हुआ करता था तथा उसे आसानी से प्राप्त किया जा सकता था लेकिन साहित्य विस्फोट में तीव्रता को देखते हुए पुस्तकालय की सेवाओं को आधुनिक विधियों द्वारा विकसित किया गया है। पुस्तकों को विभिन्न प्रकार की मानक विधि द्वारा वर्गीकरण और सूचीकरण करके शेल्फ में रखा जाता है ताकि उपयोगकर्ता अपनी आवश्यकता की सामग्री पुस्तकालय से आसानी से प्राप्त कर सकें। संस्थान के पुस्तकालय में भी Universal Decimal Classification Scheme द्वारा पुस्तकों का वर्गीकरण करके उन्हें AACR-2 के अनुसार सूचीकरण कर शेल्फ में रखा जाता है। जिससे पुस्तकालय का प्रयोग अधिक से अधिक हो सके। संस्थान के पुस्तकालय का जल विज्ञान एवं जल संसाधन के क्षेत्र में एक विशिष्ट पुस्तकालय होने के कारण इसका उपयोग रूड़की शहर में स्थापित अन्य संगठन भी करते है। जैसे- Irrigation Research Institute, Irrigation Design Organisation, रूड़की विश्वविद्यालय के विभिन्न् विभाग जैसे Deptt. Of Hydrology, Earth Science, W.R.D.T.C., Civil Engineering, USIC आदि। इन संस्थानों से प्रत्येक दिन प्रयोगकर्ता आकर अपने उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं।

संस्थान के सभी वैज्ञानिकों और कर्मचारियों को पुस्तकालय कार्ड दिये गये हैं। लगभग 50 वाचक प्रत्येक दिन पुस्तकालय में आते हैं। पुस्तकालय में फोटो कापी सुविधा भी उपलब्ध है। संस्थान के प्रत्येक वैज्ञानिक को एक वर्ष में 1000 पेज फोटो कापी करने की सुविधा है। क्षेत्रीय केन्द्रों के वैज्ञानिक भी अपने क्षेत्र से संबंधित पुस्तकों,जर्नलों एवं प्रतिवेदनों से आवश्यकता के अनुसार फोटो कापी की सुविधा से लाभांवित होते रहते हैं।

पुस्तकालय की सेवाओं को पूरा करने में पुस्तकालय स्टाफ की एक अहम भूमिका होती है क्योंकि पुस्तकायल तंत्र को ठीक प्रकार से चलाने का कार्य पुस्तकालय स्टाफ की जिम्मेदारी है। पुस्तकालय का स्टाफ पुस्तकालय का शारीरिक अंग है। पुस्तकालय कार्य एवं सेवा इस अंग पर पूर्ण रूप से निर्भर है। संस्थान के पुस्तकालय का स्टाफ पुस्तकालय की प्रगति में पूर्ण रूप से सहयोग कर रहा है।

पुस्तकालय में कम्प्यूटरीकरण

पुस्तकालय कम्प्यूटरीकरण का अर्थ उन पारम्परिक पुस्तकायल कार्य कलापों, जैसे पुस्तक चयन एवं संगृहण, परिगृहण, परिचालन, अनुक्रमणिक नियंत्रण तंत्र, ज्ञान का विशिष्ट प्रसार, चालू जानकारी सेवाएं, ऑन लाइन सूचना, पुर्नप्राप्ति, थीसॉरस निर्माण, प्रयोग कर्ताओं के अध्ययन का रख-रखाव आदि के तकनीकी प्रक्रमण का यंत्रीकरण है। कम्प्यूटरों के चलते अब कम से कम खर्च पर कम से कम समय में अत्यधिक मात्रा में आंकडों का भंडारण एवं प्राप्ति सम्भव हो गया है। दूरी के बावजूद कम्प्यूटर टर्मिनल की सहायता से गृन्थ सूची एवं पाठ्य आंकडा आधारों की खोज करना भी सम्भव हो गया है। आज भारतीय पुस्तकालय भी कम्प्यूटरीकरण की ओर बढ़ रहे हैं। रा०ज०स० के पुस्तकालय ने भी आधुनिक सूचना तकनीकी को गृहण किया है। एक बहुत ही उपयोगी पैकेज जो CDS/ ISIS (Computerized Documentation Service./ Intergrated Set of Information System) जो कि UNESCO द्वारा डिजाइन और विकसित किया गया है। को NISSAT (National Information System for Science and Technology) द्वारा प्राप्त कर गृन्थ सूची बनाने के लिए प्रयोग में लाया जा रहा है।

भविष्य की योजना

निकट भविष्य में संस्थान के पुस्तकालय को पूर्णतः कम्प्यूटरीकृत करने तथा इन्टरनेट से जोड़ने की योजना है जिससे देश के अन्य जल विज्ञान से संबंधित संस्थान भी इसके संसाधनों का पूर्ण लाभ उठा सके और देश की जल संबंधी समस्याओं का निराकरण करने में इस पुस्तकालय में उपलब्ध जानकारी का और अधिक उपयोग हो सके।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान के पुस्तकालय ने पिछले 21 वर्षो में काफी प्रगति की है। तथा जल विज्ञान और जल संसाधन में अनुसंधान के लिए समयबद्ध आवश्यक सूचना सेवा उपलब्ध कराने की ख्याति प्राप्त की है। यह विभिन्न उपयोग कर्ता समुदायों को अपनी सेवा उपलब्ध करा रहा है। जिसमें संस्थान के वैज्ञानिक, देश एवं विदेश की अन्य अनुसंधान संगठनों के शोधकर्ताओं की जल विज्ञान एवं जल संसाधन से संबंधित विषयों में प्रलेखों के द्वारा सभी स्तर की सूचना उपलब्ध करा रहा हैं जल विज्ञान के क्षेत्र में सुसंपन्न एवं आधारभूत पुस्तकालय के दर्ज के लिए यह तकनीकी पुस्तकालय के रूप में प्रगति पर हैं तथा तकनीकी विकास में पूर्ण सहयोग कर रहा हैं। मैं इसके स्वर्णिम भविष्य की कामना करता हूँ।

सूचना स्त्रोतः-

1. रा०ज०स० का वार्षिक प्रतिवेदन, 1992-93,
2. रा०ज०स० का वार्षिक प्रतिवेदन, 1998-99
३. फुरकान उल्लाह, मौ० - डंवलपमैन्ट ऑफ द लाइब्रेरी ऑफ नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हाइड्रोलोजी, रूड़की, ए लिब्रेमैटिक स्टडी. इन्डियन जर्नल ऑफ, ईमेश्न्फोन लाइब्रेरी एवं सोसाइटी, खण्ड 9, नं० 3-4, 1996, पृष्ठ संख्या - 254-265 !